Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

रोजगार परख शिक्षा में गृहविज्ञान की छात्राओं की भूमिका

डॉ प्रीतम कुमारी
सहायक विभागाध्यक्ष–गृहविज्ञान प्रोफेसर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऋशिकेश देहरादून उत्तराखण्ड
डॉ सीमा कुमारी सहायक
विभागाध्यक्ष–गृहविज्ञान प्रोफेसर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार पौडी, गढवाल, उत्तराखण्ड

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number: 19-23

Publication Issue :
May-June-2021

Article History
Accepted : 10 June 2021
Published : 20 June 2021

गृहविज्ञान एक विशय ऐसा है जिसमें कई विशयों का समावेश होता है। जैसे आहार और पोशण, वस्त्र और परिधान, गृहप्रबन्ध, बालविकास, मानव विकास, और प्रसारशिक्षा, आहार और पोशण एक ऐसा हैं। जो गृहविज्ञान की छात्र–छात्राओं के लिए अतिआवश्यक है साथ ही सभी वर्गों के लिए भी आज की छात्राए कल की गृहिणी हैं। परिवार की आधारशिला हैं। घर की सुख शांति अमन चैंन सब उस पर निर्भर करता हैं। सबसे पहले परिवार के सदस्यों के लिए आहार पोश्टिक और संतुलित होना चाहिए।

प्रतिदिन जो हम खाते है उसे आहार कहेंगें लेकिन संतुलित आहार वह कहलाएगा जिसमें की सभी पोशक तत्व पूर्ण मात्रा में हो शरीरिक और मानसिक रूप से संतुश्टि प्रदान करें। संतुलित आहार वह है। जो व्यक्ति के कार्य लिंग और उम्र के अनुसार हो जो आहार एक के लिए संतुलित आहार हैं। वह दूसरों के लिए नहीं हो सकता है। क्योंकि सभी का कार्य, अवस्था और लिंग एक जैसा नही ंहो सकता है।

इस के लिए यह जानकारी जरूर होनी चाहिये कि कौन सा व्यक्ति को किस प्रकार का आहार चाहिये कितनी कैलोरी उर्जा की आवश्यकता है। जिसके लिए आहार और पोशण का ज्ञान होना अतिआवश्यक हैं। किस भोज्य पदार्थ में कौन सा पोशक तत्व कितने मात्रा में पाया जाता है।

गृहविज्ञान एक विशय ऐसा है जिसे पढने के बाद छात्र या छात्राऍ बेरोजगार नहीं हो सकते उनके जीवन में निराशा या उदासी नहीं आ सकती हैं। वे अपना विवेक और कल्पना शक्ति का उपयोग कर अनेक प्रकार के स्वरोजगार चला सकती हैं। जिसे अर्थशास्त्र भाशा में कुटीर उद्योग कहा जाता हैं। जो छात्र छात्राऍ अपने परिवार के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सभी लोगों से सहयोग प्राप्त कर तथा हजारों लोगों को रोजगार देकर कामयाब बना सकती है।

चूल्हे की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए ही रोजगार की आवश्यकता पड़ती है जिसे आजिविका कहते हैं। आजिविका का संबंध जीवन से हैं। और जीवन ब्राहमाण्ड़ के वाहय तत्व से संचालित होता है। जिसमें पथ्वी और जलतत्व की प्रद्धानता होती है। यही जल तत्व और पृथ्वी अन्य प्रदान करता हैं। इस अन्य की उत्पादन के लिए मानवश्शक्ति की आवश्यकता पड़ती है और यही मानव शक्ति की वृद्धि के लिये आजिविका को प्रधान माना जाता है।

गृहविज्ञान में हम जीवन को चलाने के लिए उन चीजों का अध्ययन करते है क्योंकि इस मे अन्य जल आदि को उत्पादन करने के लिए मानव की आवश्यकता पड़ती है। गृह विज्ञान में उन सभी चीजों का अध्ययन किया जाता है। जो मानव को आजिविका से जोड़ती है। वर्तमान में कृशि उत्पादनों से लेकर नये प्रकार के रसांयनों पर शोध हो रहा हैं। यह सब कुछ गृहविज्ञान का विशय हैं इस विशय या गृहविज्ञान के माध्यम से रोजगार की अनेक संभावनाएॅ समीटी जा सकती हैं। इसमें सबसे पहली बडी भूमिका उस नारी की हैं जो कि अपने सम्पूर्ण परिवार की पालन पोशण करती हैं वह सबसे ज्यादा व्यस्त कहीं हैं तो चूल्हा चौंका में।

वर्तमान में इस रोजगार से लाखों नहीं करोड़ों महिलाऐं और पूरूश जुड़ी हुई हैं। जो घर से लेकर उॅचे–2 पंच सीतारे होटलों में कार्यरत है। इन सबको शिक्षित और दीक्षित करने का सबसे सशक्त माध्याम हैं गृहविज्ञान। उदाहरणार्थ पहले ग्रामीण स्त्रीयॉ चुल्हे पर लकड़ी कंडे अथवा कोयले के प्रयोग से खाना पकाती थीं। तब खाना पकाना एक थकावट तथा मेहनत वाला कार्य था क्योंकि उन्हें जलाने में काफी मेहनत तथा समय लगता था बर्तन काले होते थे, धुऑ निकलता था, रसोई घर काला होता था। तसला या भगोने में चावल दाल सब्जियॉ पकाए जाते थे। समय, श्रम अधिक लगता था परन्तु वर्तमान में प्रेशर कुकर, मिक्सर, ग्राइंडर जूसर, गैस, चूल्हा, हीटर से कम समय और श्रम में भोजन तैयार कर रख ली जाती हैं। गृहविज्ञान के द्वारा भोजन बनाने की कला ने आज अनेकों लोगों को रोजगारी बना दिया हैं। छोटें–2 होटलों से लेकर बड़े–2 गॉव से लेकर शहर देश और विदेश तक इसका विस्तार हुआ हैं। इस क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य अपेक्षित हैं।

1 **<u>टिफिन बनाने का व्यवसाय</u>ः–** आजकल शहरी जीवन में विद्यार्थीयों और नौकरी करने वालों के लिए घर में तैयार कर खाना डिब्बे में बंद कर पहुचाया जाता है। यह

बहुत ही आसानी से किए जाने वाला लोकप्रिय व्यवसाय हैं। इससे हॉस्पिटल में भी विशेशकर रोजगार मिल सकता हैं।

2 **अगरवती बनाने का कामः–** दुनिया के सभी लोग इसका उपयोग पूजा अर्चना आदि करने के लिए करते हैं।

3 **नमकीन बनाने का व्यवसायः–** विभिन्न प्रकार के नमकीन बना कर उचित मूल्य पर बेच कर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता हैं।

4 **मिटटी के बर्तन बनाने का उद्योगः–** भारतीय इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है कि यहॉ का रहने वाला प्रायः आदि काल से ही मिटटी के वर्तनों का प्रयोग करता आ रहा है। और यह परम्परा आज भी जीवित है। और इन मिटटी के वर्तनों को प्रायः एक जाति विशेश बनाया करती थीं। लेकिन आज समय बदल गया हैं। इसलिए इसे उद्योग के रूप में विकसित किया जा रहा हैं। गृहविज्ञान के छात्र–छात्राऍ भी मिटटी के घड़ा सुराही फ्लावरपौट खिलौने मुर्तियों आदि बना कर स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

5 **साड़ी कपड़ो का व्यवसायः–** बाजारों से सस्ते दाम पर कपडें खरीद कर तथा मांग के अनुसार अपने कला के अनुरूप ढाल कर उसे बाजारों में बेचा जा सकता हैं। इससे अनेकों लोगों को रोजगार भी मिलेगा और छात्र–छात्राओं का कला प्रदर्शन भी होगा।

6 **रेस्टोरेंट व बेकरी कार्नरः**– इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए कम सामग्री और कम जगहों की आवश्यकता होती हैं। आजकल शहर के भीड़भाड़ वाले इलाकों में छोटी सी जगह में रेस्टोरेंट व बेकरी कार्नर की ट्रेड बढती जा रही है। जैसे पापरीचाट, समोसा, भेलपुरी, पिज्जा, बर्गर, आदि इस छेत्र में भी गृहविज्ञान की छात्र–छात्राऍ दक्ष होते है। इसलिए इस क्षेत्र में इनकी रोजगार की संभावनाऍ स्वतः ही बढ़ जाती हैं।

7 **मसाले बनाने का उद्योगः–** विभिन्न प्रकार के मसाले तैयार कर इसके गुणों की जानकारी के अनुसार इनका उपयोग किया जाता हैं। चूकि इस क्षेत्र में गृहविज्ञान के छात्र–छात्राऐ प्रायौगिक रूप से इनका उपयोग करते हैं। इसलिए बड़ें–बडें होटल व्यवसाय में इनकी कार्य कुशलता का सुगमता से उपयोग हो सकता हैं।

8 **फर्नीचर बनाने का उद्योगः–** प्रायः देखा जाता हैं कि परम्परा से जीवित इन व्यवसायों को यदि नयी पीढ़ि की शिक्षित छात्र–छात्राऐ अपनाए तो इस क्षेत्र में उन्हें आजीविका के नये सनसाधन प्राप्त हो सकते है।

9 पापड़ बड़ी–कचडी आदि बनाने का उद्योगः– ऐसे ही सुखे पकवानो को यदि बडी मात्रा में तैयार किया जाए तो गृहविज्ञान की छात्र–छात्राऐ लाभन्वित हो सकते है।

10 साबुन बनाने का उद्योगः– साबुन व्यक्ति या समाज की एक आवश्यक आवश्यकता है। इसलिए इसकी मांग अधिक है। आज कल साबुनों का निर्माण अनेक प्रकार के रसायनिक पर्दाथों से होता है। लेकिन यदि नई तकनीकि से क्षार, नींबू आदि के साबुन बनाए जाए तो नये पीढि के छात्र–छात्राएँ अपने एक नये उद्योग चला सकते हैं।

11 कपडों की छापाईः– कपडों पर पारम्परिक वस्तूओं एवं ऐतिहासिक वस्तूओं को छापने की यदि एक नयी परम्परा चलायी जाय तो नये युग के छात्र–छात्राएँ अपनी कला को लोकप्रिय बनाने के साथ–2 अधिक धन अर्जित कर सकते हैं।

12 सिलाई कढाईः– सिलाई के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के पोशाक पर्दे टेबुलक्लॉथ आदि आते हैं। यदि नये पीढि के छात्र–छात्राए इस क्षेत्र में काम करना चाहे तो उन्हें अपार सफलता मिल सकता हैं। क्योंकि इन सबकी बाजार में बहुत अच्छी मांग हैं।

13 चुडी बनाने का कुटीर उद्योगः– इस क्षेत्र में भी गृहविज्ञान की छात्र–छात्राएँ घर पर बैठ कर परिवार के सहयोग से इस व्यवसाय को चला कर स्वयं को और अनेको लोगो को रोजगार दिला सकते हैं।

14 बुनाईः– गृहविज्ञान की छात्र–छात्राएँ इस कला में दक्ष होते है उसे दरी, कालीन, डोरमैट, स्वेटर टोपी आदि बनाकर अपने कला का प्रर्दशन भी कर सकती है। और अनेको लोगों को रोजगार भी दिला सकती है।

15 ब्यूटी पार्लरः– नयी पीढि के बच्चे इस व्यवसाय को अपनाकर अच्छा घन कमा रहें हैं।

16 दोना पत्तल बनाने का छोटा उद्योगः– सांस्कृतिक समारोह और मांगलिक कार्यो में प्रायः दोना पत्तल आदि की विशेश मांग हाती हैं। यदि इन्हें पर्यावरणीय द्वश्टि से देखा जाय तो ये लाभदायक होने के साथ–2 हमें पॉलीथीन आदि के उपयोग से बचा जा सकता हैं। इस क्षेत्र में भी नये युग के छात्र–छात्राएँ क्रांतिकारी कार्य कर सकते है। इसके अतिरिक्त अखबार के कागज से थैलिया बनाना सजावट की झाडिया बनाना जैसे वस्तुओं के निर्माण से भी धन कमाया जा सकता हैं।

17 गाय भेड़ बकरी का पालनः– पशु पालन प्रायः भारतीय कृशि व्यावसाय का मेरूदण्ड है। जिसमें की गाय भेड़ बकरी आदि का पालन आता है। इन पशुओं से हमें घी, दूध, दही, छाछ, पनीर, मलाई, खोआ, आइसक्रीम आदि प्राप्त होता है।

जिनकी आज सभी जगह मांग होती है। नयी पीढि के छात्र–छात्रऍ इनसे डेरीफार्म विकसित कर सकती है। जो कि अच्छे व्यवसाय के सांथ–2 पुण्य का काम माना जाता है। मछली बतख व मुर्गी पालन आदि गृहविज्ञान की छात्र–छात्रऍ भी इस क्षेत्र में नये तकनीकि को अपना कर उन्नत किसम के रोजगार को पाप्त कर सकते है ।

19 **पुराने वस्त्र का उपयोगः**– प्रायः हर घर में कुछ ऐसे कपड़े होते है जिन्हे या तो फेक दिया जाता है। या जला दिया जाता है। लेकिन यदि छात्र–छात्रऍ थोरा सा भी प्रयास करे तो इस सामग्री से पर्दे, थैले, पायदान आदि का निर्माण कर सकते हैं। यहॉ तक की घर में परे कतरन भूसा आदि से तकिया, कुशन, मशनद आदि बनाये जाते हैं।

20 **जैम, जैली, मुरब्बा, आचारः–** प्रायः ऐसा फल जिनका हम दैनिक जीवन में प्रयोग करते है। ये हर समय हर मौसम में उपलबध नहीं होते अतः इनका स्वाद लेने के लिए हम इनसे जैम, जैली, मुरब्बा, आचार आदि बनाते है। यदि इस व्यवसाय से नये युग के छात्र–छात्राऍ इससे नवीन व्यवसाय अपना सकते है।

21 **किचेन गार्डनः**– छोटे से ऑगन या छत पर ऐसा किचेन गार्डन बनाया जा सकता जिसमें अनेक प्रकार की सब्जियॉ और मसाले उॅगाए जा सकते है यहॉ तक कि अगर आपके पास अधिक जमीन हो तो आप बड़ी मात्रा में प्याज, लहसुन, अदरक, हल्दी, राई, मूली, सरसों, मेथी, पालक, चुकुन्दर, गाजर, शलजम, गोभी आदि को ताजा बेचकर कम परिश्रम और मूल्य पर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है।

गृहविज्ञान की क्षेत्र काफी विस्तृत और विविधता से परिपूर्ण है। यह घर की सीमा को काफी हद तक पार कर चुका है। वास्तव में यह एक ऐसा विशय है जो युवा छात्र–छात्राओं को दो महत्वपूर्ण लक्ष्यों के लिये तैयार करता है। घर तथा परिवार की देखभाल और अपनी जीवन में कैरिअर अथवा पेशे के लिये तैयार करता हैं।

आजकल महिला या पुरूश दोनों ही घर तथा परिवार की जिम्मेदारिया समान रूप से निभाते हैं। एवं अपने जीवन को सुखमय बनाते है। गृहविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है। जो एक घर को स्वव्थ तथा आनन्दमय बनाये रखने और आवश्यकता पड़ने पर एक सफल पेशे के चुनाव में आपकी मदद कर सकता हैं।

गृहविज्ञान बेकार चीजों को उपयोगी चीजे बनाने की कला सिखाता हैं। जैसे बेकार वस्तुओं से सुन्दर चीजें बनाना यह अपने चारों ओर के वातावरण को सुन्दर और आनन्दमयी बनाता है। अपने विवेक का उपयोग करके जैसे सुन्दर व्यवहार सर्व त्यागी की भावना ज्ञान वर्धक बोल और मीठी व्यवहार से प्रत्येक के दिल को जीत सकता

हैं। गृहविज्ञान के विविध क्षेत्रों की पढाई करने के बाद छात्र छात्राएँ अपने साधनों का बेहतर प्रर्दशन कर सकते है। मानवी और अमानवीय साधनों को उपयोग कर जीवन को प्रभावशाली बनाते हैं। समय, शक्ति और उर्जा बचत आदि साधन हैं जो गृहप्रबंध में सहायक होते हैं। गृहविज्ञान की शिक्षा द्वारा घर की जिममेदारियों में पुरूशों की सहभागिता भी बढ़ी हैं। परम्परागत रूप से हमारे समाज को पुरूश घर के कार्यों में बहुत क्रियाशील नहीं होते थे। लेकिन गृहविज्ञान की हुनर ने इन्हें घर को सुन्दर बनाने और सही तरीके से चलाने की सहायता प्रदान की हैं।

गृहविज्ञान ही एक मात्र ऐसा विशय हैं जो युवाओं को एक सफल गृहस्थ बनाने एक जिम्मेदार नागरिक और एक अच्छे माता–पिता बनाने में सहायक होते हैं। हमारे घर में उपयोग होने वाले वस्त्र गृह कार्य से लेकर पहनने का वस्त्र भी गृहिणी को खरीदना पडता है। इसके लिए रेशों का गुण रंग कार्य क्षमता का ज्ञान होना आवश्यक है।

बालविकास पाठ्यक्रम में हम बच्चों को जन्म से पूर्व और बाद के विकास का भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आज हमारे समाज की बनावट में काफी परिर्वतन आया हैं। सयुक्त परिवार टुटकर एकल परिवार में बदलने लगा है। ऐसे में घर की जिम्मेदारियों को पति–पत्नी को खुद ही सम्भालना पड़ता हैं। अधिकांश महिलाएँ घर सें बाहर काम पर जाने लगी हैं। इसलिए पुरूशों को घर की जिम्मेदारियों के बारे में अधिक शिक्षा की आवश्यकता पड़ती हैं। यह ज्ञान सिर्फ गृहविज्ञान के द्वारा ही सम्भव हो सकती है। आज इसलिए अनेक युवा पुरूश इस विशय को पढने के लिए जागरूक हो रहे है। छात्र–छात्राएँ घर की बहुत सारी बातें अपनी माँ और दादी को देखकर सीखती है। लेकिन विस्तृत ज्ञान के लिए गृहविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। गृहविज्ञान युवा छात्र–छात्राओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर प्रदान करता है। अन्य विशयों की तरह इस विशयों की भी पढाई पुरी करनी चाहिए और किसी एक विशय में विशेशता प्राप्त करनी चाहिए। अस्पतालों में डाइटीशियन के रूप में, बुटीक में फैशन डिजाइनर के रूप में, होटल में परिचायक परिचायिका, एवं कॉलेज में अध्यापक अध्यापिकाओं आदि के रूप में गृहविज्ञान की पढाई करके और इस विशय की पढाई के बाद छात्र–छात्राएँ अच्छी आय वाली और संतोशजनक नौकरिया प्राप्त कर सकते है।

आज के बदलते परिवेश में हमारे खान–पान में काफी परिवर्तन आया है। जंक फूड अनेक लोगो की जीवनशैली का अंग बन गया है। इस प्रकार पौश्टिक व सुपाच्य आहार के आभाव में लोगों को कई प्रकार की शारीरिक परेशानियों का सामना करना

पड रहा है। ऐसे में खान–पान की सही जानकारी देने के लिए एक आहार विशेशज्ञ या डाइटीशियन की नितान्त आवश्यक है।

अतः उपरोक्त विवेचन से सिद्व होता है कि गृहविज्ञान ही एक ऐसा विशय है जो कि मानव का सर्वांगिन विकास कर सकता है। अतः नई पीढि के छात्र–छात्राओं को इस विशय का अध्ययन अनिवार्य हो जाता हैं। जिसे कि वे अपने लिए रोजगार ही नहीं अपितु जीवन को जीने का एक अच्छा साधन भी ढूँढ सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1 आहार एवं पोशण विज्ञान – डॉ अनिता सिंह स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा–२८२००२

2 बेकरी एवं कन्फैक्शनरी – डॉ मुनीरा हुसैन शिवा प्रकाशन इन्दौर

3 प्रयोगात्मक पोशण – अरूण पल्टा शिवा प्रकाशन इन्दौर

4 गृह व्यावस्था एवं गृह सज्जा –शर्मा एवं पाटनी शिवा प्रकाशन इन्दौर

5 आहार विज्ञान – डॉ वृन्दा सिंह पंचशील प्रकाशन जयपुर